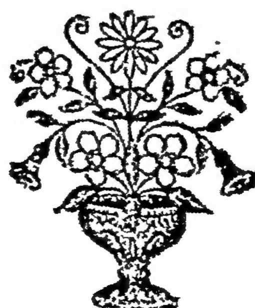
ॐ

आगम अष्टोत्तरी

(हिन्दी) भाषांतर

प्रगट कर्त्ता-हिन्दी जैन
कार्यालयके तरफसे
क. ज. गादिया
बम्बई.नं. २



दीक्षा वि स १९६३

जन्म वि. स १९४१



पूज्यपाद मुनिरत्न श्री क्षेमसागरजी महाराज.

बड़ी दीक्षा वि स १९६३

स्वर्गवास वि स १९७०

दीक्षा वि. सं १९६८

(ग्रंथ कर्ता के शिष्य)

जन्म वि सं १९२१

बडी दिक्षा वि सं १९६८



मुनिराज श्री वल्लभसागरजी महाराज.

विद्यमान अवस्था ६९ वर्ष.

श्री ऽच्चर मेष्टिनेनम ।

❀ मंगलाचरणम् ❀

सुरनर वंदित बोध मय, वन्दत हूँ श्री अरिहन्त ।
होत तुरत जिन भजन तें, भव फन्दन को अन्त ॥ १ ॥
सिद्धि सुथित सिद्धन नमूं, पुनि आचार्य अनेक ।
जिन जिन-शासन की करी, उन्नति सहित विवेक ॥ २ ॥
उपाध्याय उपदेशप्रद, साधु साधुता लीन ।
प्रणमहुँ तिनके पद कमल, होय कर्म मल छीन ॥ ३ ॥
पूज्य पच परमेष्ठि नित, शुभ मंगल के धाम ।
भव्य हेतु मैं तासु गुण, ध्याऊँ आठहुँ याम ॥ ४ ॥
पूजनीय परमेष्ठि शुभ, पूरहि मम यह आश ।
सकल जैन जन लाभ हित, हो यह ग्रन्थ विकाश ॥ ५ ॥
पूर्ण क्षेम वल्लभ सुजन, करिहैं पठन विलास ।
नित्य क्रिया विधि से इहहिं, हुइ है हृदय उजास ॥ ६ ॥
सब विधि निपट अजोग मैं, कीन्हों ग्रन्थ प्रकास ।
सज्जन क्षमहिं त्रुटिन को, यह मम दृढ़ विश्वास ॥ ७ ॥

सुजन कृपाभिलाषी—

साधु वल्लभसागर,

प्रतापगढ़ (मालवा)



श्री पञ्च परमेष्ठिने नम ।

श्री जिनदत्त-कुशल-गुरुभ्यो नमः ।

पूर्ण हेम वल्लभ-विलास ।



श्री-देव-गुरु-धर्म-वन्दन विधिः ॥



प्रथम पाठः ।

किसी स्थान में श्री देव, गुरु, धर्म भक्त दो श्रावक रहते थे। दोनों सगे भाई थे, इनमें से बड़े का नाम विवेकचंद्र और छोटे भाई का नाम विनयचंद्र था। दोनों भाई सार्थक नाम वाले थे अर्थात् बड़ा भाई अत्यन्त ही विवेकवान् था, तथा छोटा भाई विनय सम्पन्न था। बड़ा

कर अपने को कृतार्थ करेंगे, (यह कह कर साथ चलने के लिये तैयार हो गया)

विवेकचन्द्र—नीतिशास्त्रमें कहा है कि देवगुरु राजा अथवा महानुभाव के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिये, कहा है:—'रिक्तहस्तेन नो पेयाद् राजानं देवतां गुरुम् ।' इसलिये देवदर्शन के लिये चलते समय अपने को खाली हाथ नहीं चलना चाहिये। उचित है कि अपने घर पर पानी छान कर स्नान करना। शुद्ध खादी के नवीन और उज्वल वस्त्र तथा खादी का ही दुपट्टा पहिन कर, मस्तक पर केशर आदि का तिलक लगाकर, चांदी अथवा किसी और उत्तम डिबिया में धुले हुए अखण्ड चावल, बादाम लेकर श्री जिन मन्दिर को जाना चाहिये। मार्ग में चलते समय बड़ी यतना से चलना चाहिये। अपने पग के नीचे कोई जीव न आजावे इस प्रकार चलते फिरते प्राणियोंको बचा कर, किसी से नहीं छूकर चलना। दन्त कथा करते व जगह जगह पर, हंसी मज़ाक करते नहीं जाना क्योंकि जिन मन्दिर में जाकर तुमको भाव पूजा रूप परमात्मा की भक्ति करनी है। शास्त्रकारों ने इसको निवृति दायिनि अर्थात् भावपूजा मोक्ष देने वाली बतलाई है, परन्तु ध्यान रहे कि विवेक रखना प्रथम कर्तव्य है। विवेक के साथ

करने से मोक्ष होगा, अविवेक से नहीं। इस लिये चलते समय जीवों को बचा कर विवेक से चलना। मन्दिर जी के बाहर थोड़े जल से पांव धोकर दुपट्टा को अपने दांऐ कन्धे पर उत्तरासन कर लेना। अपने पास में यदि कोई खाने पीने की चीज़ हो तो बाहर किसी ताक़ (आला) में रख देना, क्योंकि मन्दिर में लेगई हुई खाने पीने की चीज़ फिर अपने काम नहीं आसकती, तत्पश्चात् मंदिर में प्रवेश करना। जब मन्दिर जी में प्रवेश करो तब तीन बार 'निस्सही' कहो और दुपट्टा मुख के आड़े करलो जिससे अपने मुख की दुर्गन्धि अथवा थूक उड़ कर आशातना न होने पावे।

विनयचन्द्र—जी साहब! ठीक है (चावल लेकर दोनों भाई चले और मन्दिर में पहुँच कर नीचे लिखे अनुसार वन्दन क्रिया की, इसी प्रकार सबको करना चाहिये।)

द्वितीय पाठ।

'निस्सही निस्सही निस्सही'

यह पाठ मन्दिर में प्रवेश करते कहना। देव मन्दिर में जाकर विनयके साथ नीचे लिखा वाक्य बोले—

त्रैलोक्य आर्त्ति हर नाथ ! तुझे नमूं मैं,
हे भूमि के विनय रत्न ! तुझे नमूं मैं ।
हे ईश ! सर्वजगत के तुझे नमूं मैं,
मेरे भवोदधि नाशक ! तुझे नमूं मैं ॥१॥

प्रभु मुद्रा को देखते ही दोनों हाथों को जोड़ कर तथा मस्तक को नमा कर फिर तीन प्रदक्षिणा देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो ! दर्शनगुणस्य प्राप्त्यर्थं प्रथम प्रदक्षिणां ददामि ।

दूसरी प्रदक्षिणा को देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो ! ज्ञानगुणस्य प्राप्त्यर्थं द्वितीय प्रदक्षिणां ददामि ।

तीसरी प्रदक्षिणा को देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो ! चारित्र गुणस्यप्राप्त्यर्थं तृतीय प्रदक्षिणां ददामि ।

इसके पश्चात् साथियां करे और यह बोले—

हे प्रभो ! चतुर्गतिनिर्मोहार्थं स्वस्तिकं रचयामि ।

अर्थ—हे प्रभो ! चारों गतियो का नाश करने के लिये मैं साथियां बनाता हूँ ।

इसके पीछे तीन पुंज (ढिगली) करे और बोले—

हे प्रभो ! ज्ञान-दर्शन-चारित्रप्राप्त्यर्थं त्रिपुन्ज रचयामि ।

अर्थ—हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारित्र की प्राप्ति के लिये मैं तीन ढिगलियों को बनाता हूँ ।

और एक ढिगली पीछे अर्द्ध चन्द्राकार करे और यह बोले—

हे करुणासिन्धो । सिद्धस्थानप्राप्त्यर्थं अर्द्ध चन्द्राकारं करोमि । पुञ्जमेकं च सिद्धवत्स्थित्यर्थं करोमि ।

अर्थ—हे कृपासिन्धो ! सिद्धस्थान की प्राप्ति के लिये मैं अर्द्धचन्द्र के समान आकार करता हूँ और एक ढिगली सिद्धसमान स्थिति के लिये करता हूं ।

इसके पीछे भगवान् की दाहिनी भुजा की तरफ खड़ा होकर तथा स्त्री हो तो भगवान् की वांई भुजा की तरफ खड़ी होकर हाथ जोड़ कर तथा दोनों गोड़ा को और मस्तक को नमा कर बोले—

इस वाक्य को उठ बैठ के साथ में तीन वार बोलना चाहिये। इसके पीछे इरियावही कहना चाहिये।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

इरियावही ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! इरिया-वहियं पडिक्कमामि? इच्छं। इच्छामि पडि-क्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए गमणा-गमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसाउत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया

अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरी ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं

अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

फिर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पार के नीचे लिखे मूजब एक लोगस्स प्रगट कहे ।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली उस-भमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिंच पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरंच मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभि-थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा चउ-

वीसंपि जिणवरा, तित्थयरामे पसीयंतु ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

फिर नीचे बैठ कर "भगवन् ! चैत्यवन्दन करूं" यह कह कर जीमणा गोड़ा नीचे करके डावा ऊंचा करे और अंजलि बांध के नीचे लिखा चैत्यवन्दन करे—

अनन्तगुणी श्रीशान्तिना नर नारी गुण गावे, द्रव्य भाव शुचि प्रेम सुं अजर अमर पद पावे। सुख संपाति कारक तुम प्रभु पूर्ण प्रीति विसराम, क्षेम कुशल नित चाहिये करूं वन्दन शिर नाम ॥ १ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि॥

नमोत्थुणं ।

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवर गंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणँ चक्खुदयाणँ मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर चाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण दंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंत मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं सम्पत्ताणं नमो

जिणाणं जिअभयाणं, जेअ अईया सिद्धा जे अ भविस्संतिणागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरि अलोए अ सव्वाइँ ताइं वंदे, इह संतो तत्थ सन्ताइँ ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहा-विदेहे अ । सव्वेसिंतोसिं पणओ, तिविहेण तिदन्ड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

यह कह कर अपनी इच्छानुसार कोई भजन स्तवन बोलना चाहिये ।

चौवीस भगवान का स्तवन

मह-ऊठी मैं सदा नमूं वारि हाथ जोड़ के साम ।
चौबीसों जिनराज को, मैं नित्य करूं परणाम ॥१॥
१ ऋषभ २ अजित ३ संभव ४ अभिनंदन अरु ५ सुमती महाराज । ६ पद्म ७ सुपारस ८ चन्दाप्रभु जी से लगन लगी है आज ॥ २ ॥प्र०॥ ९ सुविधि १० शीतल ११ श्रेयांस सवाई दीजे मुक्ति नाथ १२ वासुपूज्य जिन वारमा वारि १३ विमल १४ अनन्त रु नाथ ॥ ३ ॥प्र०॥ १५ धर्म १६ शान्ति अरु १७ कुन्थु जिनेश्वर १८ अर १९ मल्लि महाराज। २० मुनिसुव्रत २१ नमि २२ नेमजी २३॥ पार्श्व २४ वीर जिनराज ॥४॥प्र०॥ कहे पाठक कल्याण की, निधान पूरो आस । कर जोड़ी गुण गावतां, वारि चन्द गोपालदास ॥ ५ ॥ प्र० ॥

उवसग्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण-मुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंगमंतं, कंठे

धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह रोग मारी दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो तुज्झ पणा मोवि बहुफलो होई। नर तिरिए सु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोहग्गं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण। ता देव दिज्ज बोहिं भवे भवे पास जिणचन्द ॥ ५ ॥

पीछे दोनों हाथ जोड़ मस्तक लगा कर प्रेम सहित यह बोलना—

जयवियराय।

जयवियराय! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥१॥ लो ... ओ,

गुरुजणपूआ परत्थ करणं च। सुह गुरु जोगोतव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥२॥

पीछे खड़ा हो के हाथ जोड़ कर यह बोलना—

अरिहंत चेइआणं।

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कार वत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहु-

मेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

इसके पीछे काउस्सग्ग में दोनों हाथों को नीचे की ओर लम्बे करके नेत्रों को बन्द करके तथा होठ और जीभ को बिना हिलाये एक णमोकार मन्त्र का चिन्तवन करना चाहिये। काउस्सग्ग पार के (पीछे दोनों हाथों को जोड़ कर) यह बोले—

नमोर्हत्—

नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।
श्री शान्तिनाथ जी, साताकारक देव ।
मनमोहन स्वामी, अनुपम मूर्ति सेव ॥१॥
मुझ रोम हुलसिया, वंदूं प्रणमूं नाथ ।
शुद्ध समकित मांगूं, जोड़ प्रभु के हाथ ॥२॥

इस प्रकार दर्शन कर तथा पीछे पच्चक्खाण करके "आवस्सही" को तीनवार कहकर मन्दिर से बाहर जावे।

इससे यह मतलब है कि जिन बातों की मैंने क्रम से प्रतिज्ञा की थी उनकी अब छूट है।

तृतीय पाठः।

पूर्वोक्त रीति से देववन्दन विधि को पूर्ण करने के पीछे गुरुवन्दन विधि को करना चाहिये, अर्थात् गुरु महाराज के सामने खड़े होकर नीचे लिखे वाक्य से दो बार खमासमण देना चाहिये।

इच्छामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इस प्रकार खमासमण देकर नीचे लिखे पाठ को बोलकर गुरु महाराज से सुखसाता पूछनी चाहिये—

इच्छाकार।

इच्छकार भगवन्! सुह राइय, सुह देवसिय सुख तप शरीर निराबाध सुख संयमयात्रा

निर्वहो छो जी स्वामी साता छे जी ॥२॥

पूर्वोक्त पाठ को कह कर श्री गुरु जी को नमस्कार करे, पीछे नीचे बैठ कर दाहिने हाथ को नीचे रख कर बाएं हाथ को मुहपत्ती वत् मुख पर लगा कर, नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिए—

इच्छाकारेण ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओऽम्हि अब्भिन्तर राइअं* खामेउं ? इच्छं, खामेमि राइअं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥३॥

*दिन के बारह बजे तक यह पाठ कहना चाहिये, किन्तु बारह बजने के पीछे "राइअं" की जगह 'देवसिय" शब्द को बोलना चाहिये ।

उक्त पाठ को बोल चुकने के पीछे नीचे लिखे हुए वाक्य को बोलकर आहार पानी के लिये निवेदन करना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! भात पाणी रा लाभ दीजो जी ॥४॥

चतुर्थ पाठः ।

पूर्वोक्त गुरुवन्दन के पीछे सामायिक करनी चाहिये। सामायिक करने के समय पहिले श्री गुरुजी के सामने (यदि श्री गुरुजी उपस्थित न हों तो स्थापनाचार्यजी के सामने) दाहिना हाथ कर के नीचे लिखे हुए नवकार मन्त्र को तीन वार गुणना चाहिये—

श्री णमोकार मंत्र ।

णमो अरिहंताणं ॥१॥ णमो सिद्धाणं ॥२॥ णमो आयरियाणं ॥३॥ णमो उवज्झायाणं ॥४॥ णमोलोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥

मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥

इसके पीछे श्रीगुरुजी के सामने अथवा स्थापनाजी के सामने पडिलेहणा करनी चाहिये, तथा उस समय नीचे लिखे तेरह बोलों का चिन्तन करना चाहिये—

१ शुद्ध स्वरूप धारूँ, २-ज्ञान, ३-दर्शन, ४-चारित्र, ५-सहित सद्दहणा शुद्धि, ६-प्ररूपणा शुद्धि, ७-दर्शन शुद्धि, ८-सहित पाँच आचार पालूं, ९-पलावूं, १० अनुमोदूँ, ११-मनोगुप्ति, १२-वचन गुप्ति,१३- काय गुप्ति आदरूँ ।

इसके पीछे गुरु महाराज के सामने अथवा स्थापनाचार्यजी के सामने खड़े होकर तीन बार नीचे लिखे हुए पाठ से खमासमण देने चाहियें—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥१॥

इसके पीछे नीचे बैठ कर दाहिने हाथ को नीचे रख कर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये--

इच्छाकारेण ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! अब्भुट्ठिओम्हि अब्भिंतरराइयं खामेउं । इच्छं, खामेमि देवसियं । जं किंचि अपत्तियं परिपत्तियं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अन्तरभासाए, उवरि भासाए जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।२।

उक्त पाठ को बोल कर हाथको उठा ले तथा पूर्वोक्त खमासमण देकर इस प्रकार बोले—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहूं ? ॥ ३ ॥